गाँधी दर्शन के सामाजिक सरोकार

*डॉ. अल्पना सक्सेना

मोहनदास करमचंद गाँधी, एक ऐसी शख्सियत जिनके व्यक्तित्व को शब्दों में बांध सकना, लगभग असंभव है। इनके बारे में जितना भी कहा जाये, वह कम है। 2 अक्टूबर 1869 को राजकोट में जन्मा यह साधारण–सा बालक आगे चलकर अपने कृतित्व के कारण समूचे विश्व में 'महात्मा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनका अपना एक दर्शन–चिन्तन था, जो कि आज 'गाँधी–दर्शन' के नाम से जाना जाता है। बचपन में देखे गये 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' और 'श्रवण कुमार' नाटकों का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसी के फलस्वरूप वे आजीवन सत्य–अहिंसा व परहितकारी कार्यों में संलग्न रहे।

वस्तुतः गाँधीजी का सारा दर्शन – इन तीन सुदृढ़ स्तम्भों – सत्य, अहिंसा व परहितभाव पर केन्द्रित है। उनकी इस विचारधारा ने ही भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मैं यह तो नहीं कह सकती कि मैंने गाँधी–दर्शन को पूरी तरह से समझ लिया है या आत्मसात् कर लिया है परन्तु उनके दर्शन के कुछ प्रभावशाली बिन्दुओं पर अवश्य प्रकाश डालना चाहूँगी। विशेष रूप से युवा–पीढ़ी को अगर हम इस दर्शन का वास्तविक अभिप्राय समझा पाये तो हमारा यह प्रयास सार्थक रहेगा।

गाँधीजी के जीवनकाल से जुड़ी एक घटना है – दक्षिण अफ्रीका के 'जोहांसबर्ग' की। गाँधी जी वहाँ वकालत का कार्य करते थे। वहाँ उन्होंने अपने प्रयासों से हिन्दुस्तानियों को भ्रष्टाचार व शोषण से मुक्ति दिलाने के अथक प्रयास किये। जोहान्सबर्ग थाने में दो भ्रष्ट गोरे अधिकारियों को दण्ड दिलाने के लिये गाँधीजी ने काफी परिश्रम से प्रमाण इकट्ठे किये। मुकदमा चला, प्रमाण भी प्रस्तुत किये गये। फिर भी दोनों छूट गये। गाँधीजी इतने निराश हुये कि वकालत से उन्हें अरूचि होने लगी। परन्तु गाँधी जी के प्रयासों से इन दोनों अधिकारियों का अपराध इतना प्रसिद्ध हो गया था कि उनके छूट जाने पर भी सरकार उन्हें रख नहीं सकी। दोनों अधिकारी अंततः निष्कासित कर दिये गये। इससे गाँधी जी की प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हुई व हिंदुस्तानियों की वहाँ कुछ हिम्मत भी बढ़ी। यह गाँधी जी का आत्मबल ही था, जिसने हार में भी उन्हें विजय का अहसास करा दिया।

इस सम्पूर्ण घटना को उद्घाटित करने का यहाँ असली उद्देश्य दरअसल गाँधीजी के अहिंसावादी दर्शन को प्रस्तुत करना है। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि गाँधी जी का विरोध इन दो अधिकारियों के प्रति नहीं, वरन् उनके भ्रष्ट कार्यों के प्रति था। तभी तो बाद में उनकी कंगाली की हालत में गाँधी जी ने उनकी मदद भी की व अपने प्रयासों से जोहांसबर्ग की म्यूनिसिपैलिटी में उनकी नौकरी भी लगवाई।

वस्तुतः यह गाँधी जी का स्वभाव ही था और यहीं था – सत्य के प्रति आग्रह यानी सत्याग्रह जो कि अहिंसा का एक विशेष अंग है। गाँधी जी के अनुसार – मनुष्य और उसका काम – ये दो भिन्न वस्तुये हैं। अच्छे काम का सम्मान और बुरे कार्य का तिरस्कार – यह गाँधीजी के संस्कारों में निहित था। यह चीज समझने में सरल लगती है पर इसके अनुसार आचरण कम होता है।

गाँधी जी का मानना था कि 'सत्य की शोध के मूल में ऐसी अहिंसा है।' वे कहते थे कि व्यवस्था या पद्धति के विरूद्ध झगड़ना शोभा देता है पर व्यवस्थापक के विरूद्ध झगड़ा करना तो अपने विरूद्ध झगड़ने के समान है क्योंकि हम सब अंततः एक ही कूंची से रचे गये हैं। व्यवस्थापक में अनन्त शक्तियाँ होती हैं। व्यवस्थापक का अनादर करने से उन शक्तियों का अनादर होता है। हमें व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं बल्कि उसके गलत कार्यों या व्यवस्था के प्रति विरोध के स्वर बुलन्द करने चाहिये।

मोहनदास करमचंद गाँधी –एक ऐसी आत्मा जिसका आलोक अंधकारपूर्ण और अस्त–व्यस्त मानव समाज के लिए एक प्रखर दीपक का कार्य करता है। गाँधी जी वस्तुतः उन अवतारों में से एक हैं जिनका आत्मबल,निर्भीकता,सत्यवादिता आदि कई सिद्धांत युगों युगों तक मानव समाज का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। गाँधी जी का सम्पूर्ण जीवन और उनके उपदेश,उन मूल्यों के साक्षी हैं जो राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं यानी 'सार्वभौम हैं।

यह एक निर्विवादित सत्य है कि आज के भूमण्डलीकरण और उदारीकरण के युग में कोई भी देश विश्व स्तर पर तब तक अपनी पहचान नहीं बना सकता जब तक उसमें रहने वाले सभी वर्गों के बीच समता और सहयोग का वातावरण विद्यमान न हो। गाँधी जी के दर्शन में 'सर्वोदय' की अवधारणा सभी वर्गों के बीच इसी समता और सभी वर्गों की उन्नति के लक्ष्य से प्रेरित थी। सामाजिक समानता के पक्षधर गॉधी अपनी इसी विशेषता के कारण एक युग पुरुष कहलाये और यही कारण है कि न केवल भारत बल्कि विश्व भर के लोग आज भी उनकी विचारधारा,उनके दर्शन से प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

गाँधी दर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू –सामाजिक समानता के लक्ष्य को पूर्ण करना था। गाँधी जी ने महसूस किया था कि जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, सामाजिक अन्याय, महिलाओं का निम्न स्थान आदि कई कारण थे जिनसे हमारा समाज कमज़ोर हो चला था। अतः भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के साथ साथ गाँधी जी सामाजिक समता हेतु भी निरन्तर प्रयासरत् रहे। इसके लिये उन्होंने कई कार्यक्रम चलाये।

इनमें सर्वप्रथम है –'अस्पृश्यता निवारण 'का कार्यक्रम। इसके लिये सन् 1932 में उन्होंने 'हरिजन सेवक संघ'की स्थापना की और तत्कालीन कई नेताओं व उद्योगपतियों को इससे जोड़ा। इनमें घनश्यामदास बिड़ला,श्रीमती रामेश्वरी नेहरु,पंडित गोविन्दवल्लभ पंत,सी राजगोपालचारी आदि प्रमुख हैं।

गाँधी जी द्वारा चलाये गये अस्पृश्यता निवारण और सामाजिक समता की स्थापना के कार्य के पीछे एक अनोखा दर्शन रहा है–प्रायश्चित का। गाँधी जी कहा करते थे कि जिनके पुरखों ने अस्पृश्यता चलाने का पाप किया है,उन्हीं को प्रायश्चित के रूप में अस्पृश्यता निवारण का कार्य करना चाहिये। इन्हें सभी अछूत माने जानेवाले भाई बहिनों की सेवा कर उन्हें समानता के स्तर पर लाना चाहिये।

इस दर्शन को साकार करते हुये अनेक उच्चवर्गीय व्यक्तियों ने इस कार्य का बीड़ा उठाया। वस्तुतः प्रायश्चित का यह दर्शन– अहिंसा द्वारा समाज में परिवर्तन लाने की पद्धति को प्रकट करता है। यह मानता है कि क्रोध को नहीं, करूणा को परिवर्तन का माध्यम बनाया जाये। गाँधी जी ने जिसप्रकार अहिंसा और सत्याग्रह को आज़ादी प्राप्त करने का साधन बनाया,उसीप्रकार अस्पृश्यता निवारण के कार्य में समाज के सभी वर्गों का सहयोग लिया व उनमें आपसी सौहार्द्र बनाये रखने का भी प्रयास किया। गाँधी जी का सिद्वांत था कि –अन्याय को मिटाना है, अन्यायी को नहीं,अन्यायी का तो ह्रदय परिवर्तन करना है।

एक अन्य कार्यक्रम गाँधी जी ने चलाया, वह है 'हरिजन शिक्षा का कार्यक्रम'। हरिजन सेवक संघ का एक प्रमुख कार्य था – इस समाज के बालक बालिकाओं की शिक्षा हेतु विद्यालयों व छात्रावासों को चलाने का कार्य।समाज में चंदा मांगकर

गाँधी सेवक इस काम को चलाते थे। इसी तरह हज़ारों छात्रों को उन्होंने शिक्षित किया।इन्हीं छात्रों में से एक तिरुवनन्तपुरम्, केरल के छात्रावास का एक बालक भारत का राष्ट्रपति बना। श्री के.आर.नारायणन ने अपने सम्मान में हरिजन सेवक संघ के दिल्ली परिसर में आयोजित समारोह में भावपूर्ण शब्दों में कहा था – 'अगर गाँधी जी के हरिजन सेवक संघ का वह छात्रावास नहीं होता तो मैं अपने जीवन में कुछ नहीं बनता।'

इसके अतिरिक्त गाँधी जी–'भंगी मुक्ति कार्यक्रम' को विशेष महत्व देते थे। सफाई कर्मचारियों के बच्चों की पढ़ाई, उन्हें वैकल्पिक रोज़गार उपलब्ध कराना आदि कार्य 'हरिजन सेवक संघ' द्वारा चलाये गये कार्यों में विशेष स्थान रखते थे। सफाई तथा स्वच्छता उनके इस कार्यक्रम की बुनियाद थी। गाँधी जी स्वयं अपने सभी कार्य किया करते थे। स्नानगृह स्वयं साफ करते थे और अपने जूते भी स्वयं ठीक किया करते थे।

सामाजिक समता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिये 'मंदिर प्रवेश अभियान' भी एक महत्वपूर्ण चरण था। गाँधी जी स्वयं उस मंदिर में नहीं जाते थे जहॉ अस्पृश्यों का प्रवेश वर्जित हो। अस्पृश्यों के मंदिर प्रवेश के अनेक कार्यक्रम गाँधी जी ने चलाये। केरला के वायकोम मंदिर में प्रवेश के लिये सत्याग्रह चलाया गया जोकि आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में चला। मदुरै के मीनाक्षी मंदिर में प्रवेश के लिये रामेश्वरी नेहरू पहुँची थी।

महिला अधिकारों के प्रति भी गाँधी जी पर्याप्त सजग थे। वे अक्सर कहा करते थे कि लड़के को विद्यालय भेजने से सिर्फ एक व्यक्ति शिक्षित होता है मगर लड़की को विद्यालय भेजने से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। वे इस मान्यता के कट्टर विरोधी थे कि औरतें सिर्फ पुरुषों के मनोरंजन के लिये हैं। गाँधी जी स्त्री को भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ प्रतीक के रूप में स्वीकारते थे।

सामाजिक समता पर आधारित गाँधी दर्शन की अगली कड़ी के रूप में उनका साम्प्रदायिक –सद्भाव का सिद्धांत था और वे उसी के लिये शहीद भी हुये। एक अवसर पर उन्होंने कहा था–''हमें हिन्दू को बेहतर हिन्दू बनाने में,मुसलमान को बेहतर मुसलमान बनाने में तथा ईसाई को बेहतर ईसाई बनाने में सहायता करनी चाहिये। हमें अपने दिमाग से यह गुप्त अहंकार निकाल देना चाहिये कि हमारा धर्म अधिक सच्चा तथा दूसरे का धर्म कम सच्चा है।''इस प्रकार गाँधी जी ने युद्धरहित समाज का सपना देखा था, एक ऐसा समाज जिसमें न जाति हो, न वर्ग, जहॉ अहिंसक शोषण मुक्त समाज व्यवस्था हो, जिसमें मस्तिष्क मुक्त हो तथा सिर ऊँचा करके चला जा सके।

गाँधी दर्शन की एक महत्वपूर्ण सामाजिक देन यह थी कि इस दर्शन ने भारतवासियों को निडर बनाया। गाँधी जी ने भारतीयों को निडरता से जीने और उसी तरह मरने की भी प्रेरणा दी। उन्होंने भारतीयों के विलुप्त आत्मसम्मान को पुर्नप्रतिष्ठित किया। प्रेम, सेवा, त्याग जैसे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर उन्होंने सर्वाधिक बल दिया। निजी जीवन में भी सत्य और अहिंसा का पालन करते हुये गाँधी जी ने एक अक्षय विरासत हमारे लिये छोड़ी है।

गाँधी दर्शन का महत्व – समय बीतने के साथ साथ सम्पूर्ण मानवता की समझ में आने लगा है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर के शब्दों में –''यदि मानवता को प्रगति करनी है तो गाँधी को नहीं छोड़ा जा सकता।''

अन्ततः गाँधी जी की प्रार्थना के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं जोकि उनके दर्शन के सामाजिक सरोकार की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति हैं :–

''हे न्रमता के सम्राट।
दीन भंगी की दीन कुटिया के निवासी।
गंगा यमुना और ब्रह्म पुत्र के जलों से सिंचित इस सुन्दर देश में
तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे।
हमें गृहणशीलता और खुला दिल दे,
तेरी अपनी नम्रता दे,
भारत की जनता से,
एकरूप होने की शक्ति और उत्कंठा दे।

छात्र, कल्याण अधिष्ठाता
एस. एस. जैन सुबोध पी जी महाविद्यालय,
रामबाग सर्किल, जयपुर, राज.।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. 'महात्मा गाँधी के विचार' –नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।
2. गाँधी जी की संक्षिप्त आत्मकथा – संक्षेपकार–भारतन कुमारप्पा।
3. 'योजना मासिक पत्रिका – अक्टूबर '2002.
4. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
5. भारतीय समाज विन्यास – डॉ0 राधाकमल मुकर्जी।
6. भारतीय सामाजिक समस्यायें – द्वारिकादास गोयल।